जब तक प्राकृत देह विद्यमान है, तब तक भोजन, निद्रा, भय एवं मैथुन—इन शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति करनी आवश्यक है। परन्तु शुद्ध भक्तियोगी अथवा कृष्णभावनाभावित पुरुष शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए इन्द्रियों को उत्तेजित नहीं करता। वह केवल जीवन के लिए अनिवार्य पदार्थों को स्वीकार करता है और बुरे सौदे से अच्छे से अच्छा लाभ लेता हुआ कृष्णभावनामृत में दिव्य आनन्द का आस्वादन करता है। दुर्घटना, रोग, अभाव तथा मृत्यु आदि प्रासंगिक घटनाओं के प्रति उपेक्षाभाव रखता है, पर कृष्णभावनामृत अथवा भक्तियोगरूपी स्वधर्म के आचरण में सदा सचेत रहता है। बड़े से बड़ा दुःख भी उसे कभी कर्तव्य-पालन से विमुख नहीं कर सकता। भगवद्गीता में कहा गया है, **आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत।** वह इन प्रासंगिक घटनाओं को सहन करता है, क्योंकि वह भलीभाँति जानता है कि दुःख आते हैं और फिर अपने-आप चले जाते हैं, पर इससे उसके कर्तव्य पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। इस प्रकार वह योग के अभ्यास से परम-संसिद्धि को प्राप्त हो जाता है।

**स निश्चयेन योक्तव्यो योगोऽनिर्विण्णचेतसा।**
**संकल्पप्रभवान्कामांस्त्यक्त्वा सर्वानशेषतः।**
**मनसैवेन्द्रियग्रामं विनियम्य समन्ततः।।२४।।**

**सः**=उस योगपद्धति का; **निश्चयेन**=दृढ़ निश्चयपूर्वक; **योक्तव्यः**=अवश्य अभ्यास करे; **योगः**=योग; **अनिर्विण्ण चेतसा**=विचलित हुए बिना; **संकल्प**=विषयवासना से; **प्रभवान्**=उत्पन्न; **कामान्**=इन्द्रियतृप्ति को; **त्यक्त्वा**=त्यागकर; **सर्वान्**=सम्पूर्ण; **अशेषतः**=पूर्ण रूप से; **मनसा**=मन द्वारा; **एव**=निःसन्देह; **इन्द्रियग्रामम्**=सम्पूर्ण इन्द्रियों को; **विनियम्य**=वश में करके; **समन्ततः**=सब ओर से।

**अनुवाद**

उस योग का अभ्यास अचल दृढ़ता और श्रद्धा के साथ अवश्य करना चाहिए। मिथ्या अहंकार से उत्पन्न विषय-कामनाओं को सम्पूर्ण रूप से त्याग कर मन द्वारा सम्पूर्ण इन्द्रियों को सब ओर से वश में कर ले।।२४।।

**तात्पर्य**

योगाभ्यासी निश्चय और धैर्य से युक्त होकर विचलित हुए बिना अभ्यास करे। अन्त में लक्ष्यसिद्धि अवश्य होगी—इस प्रकार पूर्ण आशा और महान् धैर्य के साथ इस पद्धति का अनुसरण करे। कृतार्थता में विलम्ब होने से हतोत्साहित होना उचित नहीं, क्योंकि अशिथिल अभ्यासी अवश्य-अवश्य सफल होता है। भक्तियोग के सम्बन्ध में श्रील रूपगोस्वामिचरण का वचन है:

**उत्साहान्निश्चयाद्धैर्यात्तत्तत्कर्मप्रवर्तनात्।**
**संगत्यागात्सतोवृत्तेः षड्भिर्भक्तिः प्रसिद्ध्यति।।**